MP-वर्ग-1,2

संस्कृत

जय हो!

प्रोफेशनल एक्ज़ामिनेशन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

MP-वर्ग-1,2

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

संस्कृत

जय हो!

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

मो. 8004545096, 7800138404

समास

➢ **समासः -** सम् √अस् + घञ् = समासः

➢ **'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः'** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता है।

➢ **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता है।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे 'समास' कहते हैं।

जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**

पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**

➢ **विग्रह- ''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे 'विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए ''पीतम् अम्बरं यस्य सः'' यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

समास विग्रह- विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) लौकिक विग्रह- लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।

जैसे- 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह ''दशरथपुत्रः'' इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या **सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं।

जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **'समासः पञ्चधा'**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

नोट- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

ध्यान दें- समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद 'पूर्वपद' और उसके बाद आनेवाला पद 'उत्तरपद' होता है। 'उत्तर' पद का एक अर्थ 'बाद में' या 'बाद वाला' भी है।

जैसे-

समास	पूर्वपद	उत्तरपद
उपनदम्	उप	नदम्

विशेष ध्यान रखें- अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ 'शक्ति' शब्द अव्यय नहीं है किन्तु 'यथा' इस अव्यय के साथ

समास होने के कारण 'यथाशक्ति' यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु'' (2.1.6)

सूत्र का अर्थ- विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

1. **'विभक्ति'** के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	=	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	=	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	=	**अधिगोपम्** (गोप में)

यहाँ 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।

2. **'समीप'** अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गायाः समीपम्	=	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	=	**उपनगरम्** (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	=	**उपकृष्णम्** (कृष्ण के समीप)
कूलस्य समीपम्	=	**उपकूलम्** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	=	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. **'समृद्धि'** के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	=	**सुमद्रम्** (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
भिक्षाणां समृद्धिः	=	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. **व्यृद्धि** (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्यृद्धिः	=	**दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धिः	=	**दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

5. **'अर्थाभाव'** के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः	=	**निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः	=	**निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	=	**निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः	=	**निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः	=	**निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः	=	**निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. **अत्यय** (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः	=	**अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः	=	**अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः	=	**अतिशीतम्** (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः 'अति' इस अव्यय पद के साथ 'हिम' आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. **असम्प्रति** (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिनिद्रम्** (इस समय नींद उचित नहीं)
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिस्वप्नम्** (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिकम्बलम्** (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका 'निद्रा' आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. **शब्दप्रादुर्भाव** (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिहरि** ('हरि' शब्द का प्रकट होना)
विष्णुशब्दस्य प्रकाशः = **इतिविष्णु** ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिपाणिनि** ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः = **इतिज्ञानम्** ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. **'पश्चात्'** (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु** (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात् = **अनुरामम्** (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात् = **अनुरथम्** (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात् = **अनुशिष्यम्** (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात् = **अनुगोपालम्** (गोपाल के पीछे)
कृष्णस्य पश्चात् = **अनुकृष्णम्**

10. **'यथा'** के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-

रूपस्य योग्यम् = **अनुरूपम्** (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम् = **अनुगुणम्** (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-

अक्षम् अक्षम् प्रति = **प्रत्यक्षम्** (प्रत्यक्ष)
एकम् एकं प्रति = **प्रत्येकम्** (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति = **प्रतिगृहम्** (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति = **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्** (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति = **प्रतिजनम्** (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति = **प्रतिच्छात्रम्** (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति = **प्रतिदिशम्** (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-

शक्तिम् अनतिक्रम्य = **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य = **यथाबलम्** (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य = **यथासमयम्** (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य = **यथाबुद्धि** (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य = **यथाज्ञानम्** (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-

हरेः सादृश्यम् = **सहरि** (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम् = **सरूपम्** (रूप की समानता)

11. **आनुपूर्व्य** (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = **अनुज्येष्ठम्** (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण = **अनुवर्णम्** (वर्ण के क्रमानुसार)

12. **यौगपद्य** (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्** (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत् = **सहर्षम्** (हर्ष के साथ)

13. **सादृश्य** (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या = **ससखि** (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन = **सवर्णम्** (वर्ण के समान)

14. **सम्पत्ति** के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थसुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्** (राजाओं की सम्पत्ति)

15. **साकल्य** (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य = **सतृणम्** (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)

16. **अन्तवचन** (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = **साग्नि** (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
बालकाण्डपर्यन्तम् = **सबालकाण्डम्** (बालकाण्ड तक)

- **आङ्मर्यादाभिविध्योः** अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात् = **आमरणम्** (मरने तक)
आ जीवनात् = **आजीवनम्** (जीवन भर)

- **नदीभिश्च** (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = **पञ्चगङ्गम्** (पाँच गङ्गाओं का समाहार)

द्वयोः यमुनयोः समाहारः = **द्वियमुनम्** (दो यमुनाओं का समाहार)

सप्तानां नर्मदानां समाहारः = **सप्तनर्मदम्**

उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

➢ **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (5.4.107)**

अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-

शरदः समीपम् = **उपशरदम्** (शरद् के समीप)

विपाशं विपाशं प्रति = **प्रतिविपाशम्** (विपाशा नदी के सम्मुख)

➢ **अनश्च (5.4.108)** - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-

राज्ञः समीपम् = **उपराजम्** (राजा के समीप)

➢ **नपुंसकादन्यतरस्याम् (5.4.109)** - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-

चर्मणः समीपम् = **उपचर्मम्** (चर्म के समीप) 'टच्'प्रत्यय हुआ

चर्मणः समीपम् = **उपचर्म** (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'

अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद

तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- **''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः''**

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार **व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-**

1. द्वितीया तत्पुरुष 2. तृतीया तत्पुरुष 3. चतुर्थी तत्पुरुष
4. पञ्चमी तत्पुरुष 5. षष्ठी तत्पुरुष 6. सप्तमी तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास के उपभेद

समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-

(i) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।

(ii) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।

(iii) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।

(iv) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः'' (2.1.24)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रितः	**कृष्णश्रितः** (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	**शरणागतः** (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	**लोकातीतः** (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	**भयापन्नः** (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	**रामाश्रितः** (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	**सुखप्राप्तः** (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	**अश्वारूढः** (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	**स्वर्गगतः** (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	**दुःखातीतः** (दुःख को पार किया हुआ)
दुःखापन्नः	**दुःखम् आपन्नः**
भयम् प्राप्तः	**भयप्राप्तः**

कूपं पतितः **कूपपतितः** (कुयें में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः **ग्रामगतः** (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः **जीवनप्राप्तः** (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः **सुखापन्नः** (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' (2.1.30)

जैसे-

शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः** (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः = **धान्यार्थः** (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः = **दानार्थः** (दान से प्रयोजन)

➢ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः'' (2.1.30)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	= **मासपूर्वः** (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	= **पितृसदृशः** (पिता के समान)
मात्रा सदृशः	= **मातृसदृशः** (माता के समान)
भ्रात्रा समः	= **भ्रातृसमः** (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	= **माषोणम्** (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	= **ज्ञानहीनः** (ज्ञान से हीन)
नेत्राभ्यां हीनः	= **नेत्रहीनः** (नेत्रों से रहित)
वाचा कलहः	= **वाक्कलहः** (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	= **आचारनिपुणः** (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	= **गुडमिश्रः** (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	= **आचारश्लक्ष्णः** (आचरण में सहज)
घृतेन पक्वम्	= **घृतपक्वम्** (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	= **पादखञ्जः** (पैर से लँगड़ा)

➢ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- **''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' (2.1.32)** जैसे-

अग्निदग्धः = **अग्निना दग्धः**
विद्याविहीनः = **विद्यया हीनः**
ज्ञानेन शून्यः = **ज्ञानशून्यः**
बाणेन हतः = **बाणहतः**
आचारकुशलः = **आचार कुशलः**
हरिणा त्रातः = **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः = **नखभिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः = **नखनिर्भिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः = **धर्मरक्षितः** (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः = **बाणविद्धः** (बाण से घायल)

चतुर्थी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' (2.1.36)

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
दीनदानम्	= **दीनाय दानम्**
लोकहितम्	= **लोकस्य हितम्**
यूपाय दारु	= **यूपदारु** (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	= **कुम्भमृत्तिका** (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	= **भूतबलिः** (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	= **गोहितम्** (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	= **ब्राह्मणहितम्** (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	= **गोसुखम्** (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	= **गोरक्षितम्** (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	= **धनकामना** (धन के लिए इच्छा)

विशेष नियम- अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है- जैसे-

पुँल्लिङ्ग - द्विजाय अयम् = **द्विजार्थः सूपः** (ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम् = **द्विजार्था यवागूः** (ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम् = **द्विजार्थं पयः** (ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = **धनार्थम्** (धन के लिए)
सुखाय इदम् = **सुखार्थम्** (सुख के लिए)
रक्षाय इदम् = **रक्षार्थम्** (रक्षा के लिए)

पञ्चमी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। **''पञ्चमी भयेन'' (2.1.37)** जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
भयप्राप्तः	= **भयम् प्राप्तः**
पापात् मुक्तः	= **पापमुक्तम्**
रोगात् मुक्तः	= **रोगमुक्तः**
चोरात् भयम्	= **चोरभयम्** (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	= **व्याघ्रभयम्** (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	= **सिंहभीतः** (सिंह से भय)

वृकात् भीतिः	=	**वृकभीतिः** (भेड़िये से भय)
सर्पात् भीः	=	**सर्पभीः** (सर्प से डर)
राज्ञः भयम्	=	**राजभयम्** (राजा से डर)

➢ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

समासविग्रह		**सामासिक पद (अर्थ सहित)**
सुखात् अपेतः	=	**सुखापेतः** (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	**कल्पनापोढः** (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् मुक्तः	=	**बन्धनमुक्तः** (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	**मार्गभ्रष्टः** (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	**अश्वपतितः** (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	**वृक्षपतितः** (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	**स्वर्गपतितः** (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''षष्ठी'' (2.2.8) जैसे-

समासविग्रह		**सामासिक पद (अर्थ सहित)**
रामस्य भक्तः	=	**रामभक्तः**
कार्यस्य आलयः	=	**कार्यालयः**
परेषाम् उपकारः	=	**परोपकारः**
राष्ट्रस्य भक्तः	=	**राष्ट्रभक्तः**
नराणां पतिः	=	**नरपतिः** (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	**विद्यालयः** (विद्या का घर)
हिमस्य आलयः	=	**हिमालयः** (हिम का घर)
राज्ञः सेवकः	=	**राजसेवकः** (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	**राजपुरुषः** (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	**राजकुमारः** (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	**राजपुत्रः** (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	**राजमाता** (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	**दशरथपुत्रः** (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	**देवपूजा** (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	**रामानुजः** (राम का भाई)
कृष्णस्य सखा	=	**कृष्णसखः** (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	**नन्दनन्दनः** (नन्द का नन्दन)
ईश्वरस्य भक्तः	=	**ईश्वरभक्तः** (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	**गङ्गाजलम्** (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	**देवमन्दिरम्** (देवों का मन्दिर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	**राष्ट्रपतिः** (राष्ट्र का स्वामी)
प्रजायाः पतिः	=	**प्रजापतिः** (प्रजा का स्वामी)
सीतायाः पतिः	=	**सीतापतिः** (सीता का पति)
पशूनां पतिः	=	**पशुपतिः** (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	**पाठशाला** (पठन का घर)
देवानां भाषा	=	**देवभाषा** (देवों की भाषा)
काल्याः दासः	=	**कालिदासः** (काली का दास)

सप्तमी तत्पुरुष

सूत्र - **''सप्तमी शौण्डैः''**

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		**सामासिकपद (अर्थ सहित)**
अक्षेषु शौण्डः	=	**अक्षशौण्डः** (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	**कार्यकुशलः** (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	**रणकुशलः** (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	**मुनिश्रेष्ठः** (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	**पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	**गुरुभक्तिः** (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	**युद्धनिपुणः** (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	**नरोत्तमः** (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	**विद्याप्रवीणः** (विद्या में कुशल)
जलमग्नः	=	**जले मग्नः**
सभापण्डितः	=	**सभायां पण्डितः**
कार्यनिपुणः	=	**कार्ये निपुणः**
कार्यचतुरः	=	**कार्ये चतुरः**

तत्पुरुष समास के उपभेद

(i) नञ् तत्पुरुष समास

सूत्र- ''नञ्'' (2.2.6) 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➢ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वरवर्ण आये तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः	=	**अस्वस्थः** (बीमार)
न अश्वः	=	**अनश्वः** (घोड़ा नहीं)
न एकः	=	**अनेकः**

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह		**सामासिक पद (अर्थ सहित)**
न लौकिकः	=	**अलौकिकः**
न कृतम्	=	**अकृतम्** (जो किया न हो)
न इच्छा	=	**अनिच्छा** (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	**अनागतम्** (जो आया न हो)
न गजः	=	**अगजः** (जो गज न हो)
न उक्तः	=	**अनुक्तः** (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	**अमोघः** (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	**असिद्धः** (असफल)
न सत्यम्	=	**असत्यम्**
न द्वितीयः	=	**अद्वितीयः**
न उपस्थितः	=	**अनुपस्थितः**
न आदरः	=	**अनादरः**
न ब्राह्मणः	=	**अब्राह्मणः** (अब्राह्मण)
न ईश्वरः	=	**अनीश्वरः** (जो ईश्वर न हो)

न अर्थः	=	**अनर्थः** (अनर्थ)
न उचितः	=	**अनुचितः** (जो उचित नहीं)

(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आयें तो इनका समर्थ सुबन्तों के साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को **गति तत्पुरुष** या **प्रादि तत्पुरुष** समास कहते हैं। जैसे-

कुत्सितः पुत्रः	=	**कुपुत्रः** (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः	=	**सुदेशः** (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः	=	**कुपुरुषः** (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा	=	**कुराजा** (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः	=	**प्राचार्यः** (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः	=	**विपक्षः** (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः	=	**सुपुरुषः** (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः	=	**प्रवीरः** (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा	=	**ऊरीकृत्य** (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	=	**शुक्लीकृत्य** (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा	=	**पटपटाकृत्य** (पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)
प्रगतः पितामहः	=	**प्रपितामहः**

(iii) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति	=	**कुम्भकारः** (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति	=	**धर्मज्ञः** (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति	=	**सामगः** (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति	=	**आसनस्थः** (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति	=	**धनदः** (जो धन देता है)
भारं हरति इति	=	**भारहारः** (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति	=	**दिनकरः** (सूर्य)
शं करोति इति	=	**शङ्करः** (महादेव)
भिक्षां चरति इति	=	**भिक्षाचरः** (भिखारी)
निशायां चरति इति	=	**निशाचरः** (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)
उरसा गच्छति इति	=	**उरगः** (छाती के बल चलने वाला, साँप)
विहायसा गच्छति इति	=	**विहगः** (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)
पङ्के जायते इति	=	**पङ्कजः** (कमल)
मर्म जानाति इति	=	**मर्मज्ञः** (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति	=	**कम्बलदः** (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति	=	**प्रभाकरः** (सूर्य)

(iv) अलुक् तत्पुरुष समास

- ‘अलुक्’ का अर्थ है न लुक् अर्थात् ‘लोप’ का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे ‘अलुक्’ तत्पुरुष समास कहते हैं।

अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
आत्मने पदम्	=	**आत्मनेपदम्** (अपने लिए पद)
परस्मै पदम्	=	**परस्मैपदम्** (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	=	**युधिष्ठिरः** (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	=	**कृच्छ्रादागतः** (कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	=	**अभ्यासादागतः** (अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	=	**सरसिजम्** (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	=	**खेचरः** (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	=	**वाचस्पतिः** (बृहस्पति)
शरदि जायते	=	**शरदिजः** (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	=	**प्रावृषिजः** (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	=	**देवानाम्प्रियः** (मूर्ख)

कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

‘‘तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः’’ (1.2.42)

तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- ‘‘विशेषणं विशेष्येण बहुलम्’’ (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

कर्मधारय समास के भेद

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णः सर्पः	=	**कृष्णसर्पः** (काला साँप)
महान् चासौ देवः	=	**महादेवः** (महादेव)
महान् चासौ राजा	=	**महाराजः** (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	=	**महात्मा** (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	=	**श्रेष्ठपुरुषः** (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	=	**महापुरुषः** (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	=	**महर्षिः** (महान् ऋषि)
महान् कविः	=	**महाकविः** (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	=	**महारथी** (महान् रथी)
महत् काव्यम्	=	**महाकाव्यम्** (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	=	**श्वेतवस्त्रम्** (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	=	**श्वेताश्वः** (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	=	**सुन्दरबालकः** (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	=	**मधुरफलम्** (मधुरफल)
नीलः आकाशः	=	**नीलाकाशः** (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	=	**रक्तोत्पलम्** (लाल कमल)
गौरः बालकः	=	**गौरबालकः** (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	=	**नीलोत्पलम्** (नीला कमल)
नीलं कमलम्	=	**नीलकमलम्** (नीलकमल)
प्रियः सखा	=	**प्रियसखः** (प्रिय मित्र)
महती नदी	=	**महानदी** (बड़ी नदी)
कृष्णः च असौ सर्पः	=	**कृष्ण सर्पः**

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय

"उपमानानि सामान्यवचनैः" (2.1.55) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थसहित)
घन इव श्यामः	=	**घनश्यामः** (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	=	**विद्युच्चञ्चला** (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	=	**नवनीतकोमलम्** (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	=	**चन्द्रोज्ज्वलः** (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	=	**चन्द्रमुखम्** (चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूल इव	=	**नरशार्दूलः** (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	=	**पुरुषसिंहः** (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	=	**नरसिंहः** (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	=	**चन्द्राह्लादकः** (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	=	**कमलकोमलम्** (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	=	**पुरुषव्याघ्रः** (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	=	**दुग्धधवलम्** (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	=	**नीरदश्यामः** (बादल के समान काला)

(iii) रूपक कर्मधारय

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
शोक एव अग्निः	=	**शोकाग्निः** (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	=	**विद्याधनम्** (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	=	**मुखकमलम्** (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	=	**परीक्षापयोधिः** (परीक्षारूपी सागर)

(iv) उभयपद विशेषण कर्मधारय

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पीतः चासौ कृष्णः	=	**पीतकृष्णः** (पीला और काला)
श्वेतः चासौ कृष्णः	=	**श्वेतकृष्णः** (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	=	**चराचरम्** (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	=	**सुप्तोत्थितः** (पहले सोया फिर उठा)
कृतं च अकृतं च	=	**कृताकृतम्** (किया हुआ और न किया हुआ)
शीतं च उष्णम्	=	**शीतोष्णम्** (ठण्डा-गरम)
रक्तश्च पीतश्च	=	**रक्तपीतः** (लाल-पीला)

नोट - परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (2.426)
द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

4. द्विगु समास

''संख्यापूर्वो द्विगुः'' (2.1.52) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गवां समाहारः	=	**पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	=	**पञ्चवटी** (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	=	**पञ्चपात्रम्** (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	=	**पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	=	**पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	=	**त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	=	**त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	=	**चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	=	**अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	=	**त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	=	**शताब्दी** (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	=	**चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	=	**त्रिवेणी** (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	=	**चतुर्युगम्** (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	=	**सप्तशती** (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	=	**सप्ताहः** (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	=	**नवरात्रम्** (नव रात्रियों का समूह)

5. द्वन्द्व समास

''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'' अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = **रामकृष्णौ**
यहाँ 'राम' और 'कृष्ण' दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

द्वन्द्व समास के भेद- द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।
जैसे- 'रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ' - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ 'रामलक्ष्मणौ' में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

(ii) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे 'समाहार द्वन्द्व' कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।
यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

(iii) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे 'एकशेष द्वन्द्व' कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहिता च = दुहितरौ।

➤ यदि समास में पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुँल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = **पितरौ**
मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ**

द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र

''चार्थे द्वन्द्वः'' (2.2.29) इस सूत्र से 'च' (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	=	**सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	=	**रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	=	**देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	=	**धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	=	**कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	=	**वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)
पार्वती च परमेश्वरश्च	=	**पार्वतीपरमेश्वरौ** (पार्वती और परमेश्वर महादेव)
हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च	=	**हेमन्तशिशिरवसन्ताः**

सूर्यश्च चन्द्रश्च	=	**सूर्यचन्द्रौ** (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च	=	**शिवकेशवौ** (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च	=	**रामलक्ष्मणौ** (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च	=	**भीमार्जुनौ** (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च	=	**सज्जनदुर्जनौ** (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च	=	**ईशकृष्णौ** (ईश और कृष्ण)
पिता च पुत्रश्च	=	**पितापुत्रौ** (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च	=	**हरिहरौ** (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च	=	**बालवृद्धौ** (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च	=	**नरनार्यौ** (नर और नारी)
जाया च पतिश्च	=	**जायापती/जम्पती/दम्पती** (पति और पत्नी)

नोट- इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-

☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = **हरिहरगुरवः**

☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च = **रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः**

यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	=	**पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च	=	**रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च	=	**भेरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च	=	**अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च	=	**अहोरात्रम्** (रात और दिन)
रथाश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः	=	**रथाश्वम्** (रथ और घोड़े)
संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	=	**संज्ञापरिभाषम्** (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

नोट- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद **नपुंसकलिङ्ग एकवचन** का प्रयोग होता है।

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
माता च पिता च	=	**पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च	=	**पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च	=	**रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च	=	**हंसौ** (हंस और हंसी)
युवा च युवती च	=	**युवानौ** (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च	=	**दुहितरौ** (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च	=	**मयूरौ** (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च	=	**भ्रातरौ** (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च	=	**श्वसुरौ** (सास और ससुर)

द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण

(i) एकः च दश च = **एकादश**

(ii) द्वौ च दश च = **द्वादश**

(iii) त्रयः च दश च = **त्रयोदश**

(iv) अष्टौ च दश च = **अष्टादश** इत्यादि में भी द्वन्द्व समास है।

6. बहुव्रीहि समास

''**अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः**'' अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।

जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः**।

यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद 'गणेश' की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24)

अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद-

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि- इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	=	**पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः	=	**लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा है उदर जिसका
नीलं कण्ठं यस्य सः	=	**नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका

सागरः मेखला यस्याः सा = **सागरमेखला**

श्वेतम् अम्बरं यस्य सः = **श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका

दाम उदरं यस्य सः = **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके

जितानि इन्द्रियाणि येन सः = **जितेन्द्रियः** (मुनि) जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने

शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)

दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)

चत्वारि आननानि यस्य सः = **चतुराननः** (ब्रह्मा)

दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)

प्राप्तम् उदकं यं सः = **प्राप्तोदकः**(जल जिसे प्राप्त है।)

महान् आशयः यस्य सः = **महाशयः** (सभ्य व्यक्ति)

यशः एव धनं यस्य सः = **यशोधनः** (राजा) यश ही है धन जिसका

लब्धा प्रतिष्ठा येन सः = **लब्धप्रतिष्ठः** (विद्वान्)

नीलम् अम्बरं यस्य सः = **नीलाम्बरः** (बलराम)

दिव्यम् अम्बरं यस्य सः = **दिव्याम्बरः** (दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)

पञ्च आननानि यस्य सः = **पञ्चाननः** (शिव)

नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव)

गज इव आननं यस्य सः = **गजाननः** (गणेश)

कमलम् आसनं यस्य सः = **कमलासनः** (ब्रह्मा)

लम्बौ कर्णौ यस्य सः = **लम्बकर्णः** (लम्बे हैं कान जिसके, वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि

इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-

चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** (विष्णु)

वीणा पाणौ यस्याः सा = **वीणापाणिः** (सरस्वती)

धनुः पाणौ यस्य सः = **धनुष्पाणिः** (श्रीराम)

चन्द्रः शेखरे यस्य सः = **चन्द्रशेखरः** (शिव)

पीयूषं पाणौ यस्य सः = **पीयूषपाणिः** (वैद्य)

मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा = **मृगनयनी** (स्त्री) (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके)

शूलं पाणौ यस्य सः = **शूलपाणिः** (शूल है हाथ में जिसके, वह)

शीतिः कण्ठे यस्य सः = **शीतिकण्ठः** (शिव) (नीलिमा है जिसके कण्ठ में, वह)

चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः = **चन्द्रकान्तिः** (चन्द्र की कान्ति के समान कान्ति है जिसकी, वह)

गदा पाणौ यस्य सः = **गदापाणिः** (विष्णु)

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

☆ केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **केशाकेशि** (बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध)

☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् = **हस्ताहस्ति** (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)

☆ दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **दण्डादण्डि** (परस्पर लाठियों से मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)

☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **मुष्टामुष्टि** (परस्पर मुक्कों से मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी गयी)

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह = **सार्जुनः** (अर्जुन के साथ)

राधिकया सह इति = **सराधिकः** (कृष्ण) राधिका के साथ

भार्यया सह = **सभार्यः** (स्त्री सहित)

कलाभिः समम् = **सकलम्** (कलाओं से युक्त)

सीतया सह = **ससीतः** (राम, सीता के साथ)

पुत्रेण सह = **सपुत्रः** (पुत्र के साथ)

परिवारेण सह = **सपरिवारः** (परिवार के साथ)

अनुजेन सह = **सानुजः** (अनुज के साथ)

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-

☆ द्वौ वा त्रयो वा = **द्वित्राः** (दो या तीन)

☆ त्रयः वा चत्वारो वा = **त्रिचतुराः** (तीन-चार)

☆ पञ्च वा षट् वा = **पञ्चषाः** (पाँच या छह)

☆ युवतिः जाया यस्य सः = **युवजानिः** (जिसकी स्त्री युवती है, वह)

☆ सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः** (जिसकी स्त्री सीता है, वह राम)

☆ पठितुं कामं यस्य सः = **पठितुकामः** (पढ़ने की इच्छा वाला)

☆ अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः = **अपुत्रः** (नहीं है पुत्र जिसके, वह)

☆ चित्रा गावो यस्य सः = **चित्रगुः** (चितकबरी गायों वाला व्यक्ति)

❑❑

कारक तथा विभक्ति

➢ **कृ + ण्वुल् = कारक**

➢ **'क्रियां करोति इति कारकम्'** क्रिया को करने वाला कारक है।

➢ **'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'** क्रिया का जो जनक होता है, वह कारक है।

➢ **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।

जैसे- वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।

वनात् आगत्य रामः सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन जघान।

स्पष्टीकरण-

(i) इस वाक्य में 'मारना' क्रिया को सम्पादित करने वाला 'राम' है, अतः 'राम' कर्ताकारक है।

(ii) क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह कर्म है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है, अतः 'रावण' कर्म है।

(iii) क्रिया के सम्पन्न करने में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'मारने' की क्रिया में अत्यधिक सहायक 'बाण' है अतः 'बाण' करण कारक है।

(iv) सीता के लिए रावण मारा गया, अतः 'सीता' सम्प्रदान है।

(v) 'वन' अपादान कारक है।

(vi) मारने की क्रिया लंका में पूर्ण हुई थी, अतः लंका अधिकरण कारक है।

इसप्रकार इस वाक्य में 'राम, सीता, रावण, वन, बाण, लंका' इन सभी शब्दों का 'मारना' (जघान) क्रिया से सम्बन्ध है, अतः उपर्युक्त ये सभी शब्द कारक हैं।

कारकों की संख्या

कारक छह हैं- **1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण**

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

➢ जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक नहीं होते, उन्हें कारक नहीं कहा जा सकता। इसीलिए सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते क्योंकि क्रिया के साथ इनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता।

कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति

1. स्वतन्त्रः कर्ता- क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय, वही कर्ता होता है। यह सूत्र 'कर्तृसंज्ञा' करने वाला संज्ञा सूत्र है। जैसे- मोहनः पठति। यहाँ 'मोहन' पठन क्रिया करने में स्वातन्त्र्येण विवक्षित है, अतः 'मोहन' कर्ता है। रामः पठति, श्यामः गच्छति, बालकः गच्छति, रमा नृत्यति, सीता गायति, दिनेशः गच्छति, बालकः पठति।

➢ वाक्य में कर्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तृवाच्य- मोहनः पुस्तकं पठति। - यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, और कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ख) कर्मवाच्य- मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। यहाँ 'कर्म' की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ग) भाववाच्य- रामेण भूयते। यहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

2. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र के आधिक्य में, परिमाण मात्र के आधिक्य में तथा वचनमात्र के आधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।

➢ किसी प्रातिपदिक के उच्चारण से स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या और कारक- इन पाँचों में, जिसका ज्ञान निश्चित रूप से हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

उदाहरण- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा- जिन शब्दों के लिङ्ग निश्चित नहीं हैं, उन शब्दों से लिङ्गमात्राधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।
जैसे- **ततः** (पुंलिङ्ग), **तटी** (स्त्रीलिङ्ग), **तटम्** (नपुंसकलिङ्ग)

परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा- परिमाण (वजन, माप, तौल) मात्रा का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- **द्रोणो व्रीहिः।**

वचनमात्रे प्रथमा- वचन अर्थात् संख्यामात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा- **एकः, द्वौ, बहवः।**

3. सम्बोधने च - सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है- जैसे- **हे राम! अत्र आगच्छ!** यहाँ हे राम! में सम्बोधन होने से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त है। हे बालिके!, भो राम! भवान् कुत्र गच्छति। हे मोहन! अत्र आगच्छ।

4. उक्ते कर्तरि प्रथमा- कर्तृवाच्य में जहाँ कर्ता उक्त या 'कहा गया' रहता है, उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- रामः गृहं गच्छति।

➢ यहाँ 'राम' कर्तृवाच्य का कर्ता है जो कि उक्त है अतः 'रामः' में प्रथमा विभक्ति है।

इसप्रकार प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में, सम्बोधन में, उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।

द्वितीया विभक्ति (कर्मकारक)

1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है।
जैसे- **रामः लेखन्या पत्रं लिखति।**
यहाँ 'राम' रूपी कर्ता अपनी लेखन रूपी क्रिया से सबसे ज्यादा 'पत्र' लिखना चाह रहा है अतः 'पत्र' यहाँ कर्म होगा।

2. कर्मणि द्वितीया- कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
जैसे-
रामः **गृहं** गच्छति, बालिका **पुस्तकं** पठति, सः **विद्यालयं** गच्छति, रामः **पुस्तकं** पठति, रामः **फलम्** खादति, राधा **मन्दिरं** गच्छति, महेशः **जलं** पिबति, रामः **विद्यालयं** गच्छति, रमेशः **जलं** पिबति, बालकः **पुस्तकं** पठति, बाला **ग्रामं** गच्छति, छात्रः **विद्यालयं** गच्छति, अहं **जलं** पिबामि, बालकाः **फलानि** खादन्ति, सः **नगरं** गच्छति, भक्तः **हरिं** भजति।
उपर्युक्त वाक्यों में 'गृह, विद्यालय, जल, फल, नगर, हरि' इन सभी की कर्मसंज्ञा है, अतः सभी पदों में कर्म होने के कारण 'कर्मणि द्वितीया' से **द्वितीया विभक्ति** हुई है।

3. अकथितं च- अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों के द्वारा अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक होता है। दुह् आदि (बारह) एवं नी आदि (चार) कुल 16 धातुओं के कर्म से जिसका सम्बन्ध होता है, वह अकथित कहा जाता है।

सोलह द्विकर्मक धातुयें- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् -12
नी, हृ, कृष्, वह् = 4 ये सोलह द्विकर्मक धातुयें हैं।
इन सोलह धातुओं एवं इनके समानार्थक धातुओं के योग में अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है, और उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

	धातु	प्रयोग	अर्थ
1.	**दुह्** (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोग्धि।	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
2.	**याच्** (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि बलि से पृथ्वी माँगते हैं।
		सः नृपं क्षमां याचते।	वह राजा से क्षमा माँगता है।
3.	**पच्** (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती है।
4.	**दण्ड्** (दण्ड देना)	राजा चौरं शतं दण्डयति।	राजा चोर से 100 रुपये दण्ड लेता है।
5.	**रुध्** (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
6.	**प्रच्छ्** (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
7.	**चि** (चुनना)	बालकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता है।
8.	**ब्रू** (बोलना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य से धर्म बताता है।
9.	**शास्** (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।
10.	**जि** (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
11.	**मथ्** (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
12.	**मुष्** (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ रुपये चुराता है।

13. **नी** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं नयति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
14. **हृ** (हरना)	कृषकः धेनुं ग्रामं हरति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
15. **कृष्** (खींचना)	कृषकः धेनुं ग्रामं कर्षति।	किसान गाय को गाँव तक खींचकर ले जाता है।
16. **वह्** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं वहति।	किसान गाय को ग्राम तक वहन करता है।

4. अधिशीङ्स्थासां कर्म- (1.4.46) **शी** (सोना), **स्था** (ठहरना), **आस्** (बैठना) - इन तीन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा होती है, और कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

1. राजा **सिंहासनम्** अधितिष्ठति। (राजा सिंहासन पर बैठता है)
2. हरिः **वैकुण्ठम्** अध्यास्ते। (हरि वैकुण्ठ में बैठते हैं)
3. शिष्यः **आसनम्** अधितिष्ठति। (शिष्य आसन पर बैठता है)
4. मुनिः **शिलाम्** अधिशेते। (मुनि शिला पर सोते हैं)
5. सः **पर्यङ्कम्** अधिशेते (वह पलंग पर सोता है)

उपर्युक्त वाक्यों में सिंहासन, वैकुण्ठ, आसन, शिला, पर्यङ्क ये सभी आधार हैं। यहाँ सभी क्रिया पदों में 'अधि' उपसर्ग के साथ शीङ्, स्था, आस्, धातुओं का प्रयोग है। अतः आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

5. अभिनिविशश्च- (1.4.47) 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि 'विश्' धातु के पूर्व में आयें तो आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी।

जैसे- **सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशते।**
(सज्जन सन्मार्ग में प्रवेश करते हैं)

➢ यहाँ 'अभिनिविशते' में 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग के साथ 'विश्' धातु का प्रयोग हुआ है अतः 'सन्मार्गम्' इस आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

6. उपान्वध्याङ्वसः - (1.4.48) उप, अनु, अधि या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि वस् धातु के पूर्व में आये तो आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा।

जैसे- राजा **नगरम्** उपवसति। (राजा नगर में रहता है)
राजा **नगरम्** अनुवसति।
राजा **नगरम्** अधिवसति।
राजा **नगरम्** आवसति।

➢ यहाँ 'वस्' धातु के पूर्व उप, अनु, अधि एवं आङ् उपसर्ग का प्रयोग हुआ है अतः आधार 'नगर' की कर्मसंज्ञा हो गयी और उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

7. अन्तराऽन्तरेण युक्ते- (2.3.4) 'अन्तरा' (मध्य में) और 'अन्तरेण' (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) अन्तरा **ग्रामं** नदी प्रवहति। (दो गाँवों के बीच नदी बहती है)
(ii) **संस्कृतम्** अन्तरेण न किमपि जानामि। (संस्कृत के सिवाय और कुछ नहीं जानता)

8. अभितः - परितः - समया - निकषा - हा - प्रति-योगेऽपि-

अभितः (दोनों ओर या आस पास) **परितः** (चारों ओर) **समया** (समीप) **निकषा** (निकट) **हा** (शोक) **प्रति** (ओर) इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **ग्रामम्** अभितः वनम् अस्ति। (गाँव के आस-पास वन है)
(ii) **आश्रमम्** अभितः वृक्षाः सन्ति। (आश्रम के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(iii) **विद्यालयं** परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं)
(iv) **ग्रामं** परितः उपवनानि सन्ति। (गाँव के चारों ओर उपवन हैं)
(v) **लङ्कां** समया सागरः अस्ति। (लङ्का के समीप सागर है)
(vi) **लङ्कां** निकषा हनिष्यति (लङ्का के समीप मारेगा)
(vii) हा **कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है)
(viii) **बुभुक्षितं** न प्रतिभाति किञ्चित् (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता)
(ix) छात्रः **गुरुं** प्रति श्रद्धधाति। (छात्र की गुरु के प्रति श्रद्धा है)
(x) सः **नगरं** प्रति गच्छति। (वह नगर की ओर जाता है)

नृपम् अभितः परिचारकाः सन्ति, उपवनं परितः जनाः भ्रमन्ति, नगरम समया निकष वा वनम् अस्ति, बालकः विद्यालयं प्रति गच्छति, जलविना मीनः न जीवति, वानरः वृक्षमारोहति, प्रथमः अमितः उभयतः भवनानि सन्ति, शशाङ्कः परितः तारा वर्तन्ते, चन्द्रमा परितः ताराः वर्तन्ते, सः पाटलिपुत्रं प्रतिगच्छति, धिक् ज्ञानहीनम्, ज्ञानं विना मानवः पशुवत अस्ति, अशिक्षतम् धिक्।

**9. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥**

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः पदों के योग होने पर द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

(i) उभयतः **नदीं** वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(ii) मार्गम् **उभयतः** वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं)
(iii) नगरं **सर्वतः** प्राकारः अस्ति। (नगर के चारों ओर परकोटा है)
(iv) धिक् **कृष्णाभक्तम्।** (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)
(v) उपर्युपरि **लोकं** हरिः। (इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं)

(vi) अध्यधि **लोकं** हरिः। (हरि लोक के पास हैं)

(vii) अधोऽधः **लोकं** हरिः। (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं)

10. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)

➢ यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो तो ऐसे कालवाची पद में द्वितीया विभक्ति होगी।

➢ इसी तरह यदि अध्व (मार्ग की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस अध्ववाचक = मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) मार्गवाचक- **छात्रः क्रोशम् अधीते**
(छात्र कोश भर लगातार पढ़ता है)

(ii) मार्गवाचक- **क्रोशं गिरिः वर्तते।** (कोश भर विस्तृत पर्वत है)

(iii) मार्गवाचक- **क्रोशं कुटिला नदी** (कोश भर नदी टेढ़ी है)

(iv) कालवाचक-**सः मासम् अधीते रामायणम्** (वह महीने भर रामायण पढ़ता है)

(v) कालवाचक - **सः सप्ताहं पठिष्यति** (वह सप्ताह भर पढ़ता है)

(vi) कालवाचक- **छात्रः मासम् अधीते**
(छात्र महीने भर लगातार पढ़ता है)

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

1. साधकतमं करणम् - क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं।

'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्'।

यथा- सः हस्तेन मिष्टान्नं वितरति।

यहाँ- मिष्टान्न वितरण रूपी कार्य को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है, अतः 'हाथ' करण है।

2. कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) - अनुक्त कर्ता अर्थात् (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता) और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **कुठारेण** वृक्षं छिनत्ति। (वह कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है) - करण में तृतीया

(ii) **रामेण** बालिः हतः (राम के द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता में तृतीया

(iii) बालकः **दण्डेन** सर्पं हन्ति। (बालक डण्डे से साँप को मारता है) - करण में तृतीया

(iv) त्वं **कलमेन** पत्रं लिख। (तू कलम से पत्र लिख) - करण में तृतीया

(v) मोहनः **दात्रेण** लुनाति। (मोहन हसियें से काटता है) - करण में तृतीया

(vi) **रामेण बाणेन** हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता (रामेण) और करण (बाणेन) दोनों में तृतीया।
कृष्णः यानेन गच्छति, मनोजः कन्दुकेन क्रीडति, मयङ्कः यानेन गच्छति, प्रज्ञा लेखन्या लिखति, रामः बाणेन रावणं हन्ति, शिक्षकः सुधाखण्डेन लिखति, बालकः वाहनेन गच्छति, गीता लेखन्या लिखति, छात्रः कन्दुकेन क्रीडति।

3. सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19) -

सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि सहार्थक शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

(i) पुत्रेण सह आगतः पिता। (पुत्र के साथ पिता आया)

(ii) पिता पुत्रेण सह मेरठनगरं गतः (पिता पुत्र के साथ मेरठनगर को गया)

(iii) रामः जानक्या साकं गच्छति। (राम जानकी के साथ जाते हैं)

(iv) मोहनः गुरुणा सार्धं विद्यालयं गच्छति। (मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।)

(v) लक्ष्मणेन समं रामः गच्छति। (लक्ष्मण के साथ राम जाते हैं)
आशुतोषः मित्रेण सह गच्छति, सीता रामेण सह वनं गच्छति, अहं लतया सह गच्छामि, अलं विवादेन, विद्यया यशः प्राप्यते।

4. येनाङ्गविकारः - (2.3.20) शरीर के जिस अङ्ग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) अक्ष्णा काणः (आँख से काना)

(ii) हस्तेन लुञ्जः (हाथ से लुञ्जा)

(iii) शिरसा खल्वाटः (शिर से गंजा)

(iv) कर्णाभ्यां बधिरः (कानों से बहरा)

(v) पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा)

(vi) पृष्ठेन कुब्जः (पीठ से कुबड़ा)

कर्णेन बधिरः, नेत्रेण काणः, श्रमेण सफलता भवति, जटाभिस्तपसः, कुर्चेन यवन।

यहाँ 'आँख से' काना दिखायी पड़ रहा है, इसलिए 'अक्ष्णा' में तृतीया विभक्ति हुई। इसीप्रकार 'हाथ से' लुंजा है अतः 'हस्तेन' इस अङ्गवाची पद में तृतीया विभक्ति हुई।

5. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् -

➢ पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया

विभक्ति होती है।

➢ 'नाना' शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ 'विना' के अर्थ में प्रयुक्त है। जैसे-

(i) **जलेन** विना न जीवति कमलम्।
(जल के विना कमल जीवित नहीं रहता)

(ii) **ग्रामं** पृथक् या **ग्रामेण** पृथक् या **ग्रामात्** पृथक्
(गाँव से अलग)

(iii) **रामं** विना या **रामेण** विना या **रामात्** विना (राम के विना)

(iv) नाना **रामेण** या नाना **रामात्** या नाना **रामम्**
(राम के विना)

शिक्षकैः सह छात्रा भोपालं गच्छन्ति, जलेन विना जीवनं नास्ति, अलं विवादेन, अलं कोलाहलेन, अध्यापकेन सह छात्राः गच्छन्ति, अलं श्रमेण, ज्ञानेन हीनः नरः न शोभते, विद्यया हीनः पुरुषः न पूज्यते।

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) - कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है; अर्थात् कर्ता जिसे कुछ देता है, या जिसके लिए कुछ करता है, वह 'सम्प्रदान' कहलाता है।

सम्प्रदान- 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्' (जिसे कुछ दिया जाय, परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय, वह सम्प्रदान होता है)

2. चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) - सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है)

(ii) माता **बालकाय** फलं ददाति। (माता बालक को फल देती है)

(iii) **उपाध्यायाय** गां ददाति (उपाध्याय के लिए गाय देता है)

(iv) **ब्राह्मणाय** भूमिं ददाति। (ब्राह्मण को भूमि देता है)

➢ काले मोटे अक्षरों में लिखे गये शब्द सम्प्रदान कारक हैं, जिसमें चतुर्थी विभक्ति लगी है। अन्य उदाहरण -
महेश मित्राय धनं ददाति, राजा ब्राह्मणाय धनं ददाति, रमेशः मित्राय धनं ददाति, मोहनः शिक्षायै विदेशं गच्छति, माता बालकाय दुग्धं ददाति, सः बालकाय दुग्धं ददाति, रमेशः अध्ययनाय विद्यालयं गच्छति, भिक्षुकाय शिक्षां ददाति, सः निर्धनाय भिक्षुकाय दानं ददाति।

3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33)

रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो प्रीयमाण अर्थात् जो प्रसन्न होता है, या जिसको पसन्द होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **हरये** रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)

(ii) **सुरेशाय** दुग्धं रोचते। (सुरेश को दूध अच्छा लगता है)

(iii) **मह्यं** मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू पसन्द है)

(iv) **मह्यम्** ओदनं रोचते। (मुझे भात अच्छा लगता है)

यहाँ 'हरि' को भक्ति पसन्द है, सुरेश को दूध पसन्द है, मुझे लड्डू पसन्द है, मुझे ओदन (भात) पसन्द है, तो जिसे पसन्द है वो प्रीयमाण है, और जो प्रीयमाण है उसी की सम्प्रदानसंज्ञा होगी, और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होगी, इसीलिए ''हरये, सुरेशाय, मह्यम्'' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

अन्य उदाहरण - कृष्णाय मोदकं रोचते, बालकाय मोदकं रोचते।

4.''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' (1.4.37)

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय् (जलन करना) इन धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध किया जाता है उसकी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) पिता **पुत्राय** क्रुध्यति। (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)

(ii) दुष्टाः **सज्जनाय** द्रुह्यन्ति (दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं)

(iii) कंसः **कृष्णाय** ईर्ष्यति (कंस कृष्ण से ईर्ष्या करता है)

(iv) दैत्याः **देवेभ्यः** असूयन्ति (दैत्य देवों से जलते हैं)

(v) तनुश्रीदत्ता **नानापाटेकराय** क्रुध्यति (तनुश्रीदत्ता नानापाटेकर पर क्रोध करती है)

(vi) रावणः **रामाय** असूयति (रावण राम से द्वेष करता है)

यहाँ पिता अपने पुत्र पर क्रोध करता है, इसलिए जिस पर क्रोध किया जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसीलिए 'पुत्राय' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

अन्य उदाहरण - परशुरामः लक्ष्मणाय कुध्यति, रमेशः सुरेशाय असूयति, प्रजाः नृपाय असूयन्ति, रामः मुर्खाय क्रुद्धति, शिक्षकः मुर्खाय क्रुध्यति।

5. स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)

स्पृह् (चाहना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह, इच्छा या अभीप्सा होती है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) सा **पुरुषेभ्यः** स्पृहयति। (वह पुरुषों को चाहती है)

(ii) रमा **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति (रमा फूलों की चाह करती है)

(iii) बालिकाः **फलेभ्यः** स्पृहयन्ति (लड़कियाँ फलों की चाह करती हैं), माता पुत्राय स्पृहयति।

(iv) अहं **संस्कृताय** स्पृहयामि (मैं संस्कृत चाहता हूँ)

6. ''नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषट्योगाच्च'' (2.3.16)

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् - इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा-

(i) **गणेशाय** नमः (गणेश के लिए नमस्कार है)

(ii) **शिवाय** नमः (शिव को नमस्कार है)

(iii) **देवेभ्यः** नमः (देवताओं को नमस्कार है)

(iv) **विष्णवे** नमः (विष्णु को नमस्कार है)

(v) **तुभ्यम्** स्वस्ति (तुम्हारा कल्याण हो)

(vi) **बालकाय** स्वस्ति (बालक का कल्याण हो)

(vii) **इन्द्राय** स्वाहा (इन्द्र के लिए स्वाहा)

(viii) **अग्नये** स्वाहा (अग्नि के लिए स्वाहा)

(ix) **पितृभ्यः** स्वधा (पितरों को स्वधा)

(x) **दैत्येभ्यः** हरिः अलम् (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं)

अन्य उदाहरण - गुरवे नमः, ईश्वराय नमः, बालकाय स्वस्ति, हरये नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति, भीमः दुर्योधनाय अलम्, सर्वेभ्य स्वस्ति, अर्जुनः कर्णाय अलम्, पित्रे स्वधा, सः निर्धनाय भिक्षुकाय दानं ददाति।

पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

1. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1.4.24)

अपाय (अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे कोई वस्तु अलग हो रही हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। जैसे-

वृक्षात् पत्रं पतति। (वृक्ष से पत्ता गिरता है)

इस वाक्य में पत्ता 'वृक्ष' से अलग हो रहा है अतः वृक्ष 'अपादान' है।

2. अपादाने पञ्चमी (2.3.28)

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **ग्रामात्** गच्छति। (वह गाँव से जाता है)

(ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)

(iii) महेशः **आसनात्** उत्तिष्ठति (महेश आसन से उठता है)

(iv) गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति। (गंगा हिमालय से निकलती है)

(v) बालकः **सोपानात्** पतति (बालक सीढ़ी से गिरता है)

(vi) सर्वे **विमानात्** अवतरन्ति (सभी विमान से उतरते हैं)

अन्य उदाहरण - नगरात वहिः वनं अस्ति, सैनिकः अश्वात् पतति, धनात् विना सुखं नास्ति, बालकः अश्वात् पतति।

3. जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा.)

वार्तिकार्थ- जुगुप्सा (घृणा, निन्दा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) इन अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद किया जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **पापात्** जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)

(ii) सः **कार्यात्** विरमति (वह कार्य से रुकता है)

(iii) सः **पठनात्** प्रमाद्यति। (वह पढ़ने से प्रमाद करता है)

(iv) सः **धर्मात्** प्रमाद्यति। (वह धर्म से प्रमाद करता है)

(v) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः (स्वाध्याय से प्रमाद मत कर)

अन्य उदाहरण - पापात् विरमति, चोराद विभेति, जपात् विरमति, विद्यालयः सप्तवादनात् आरभ्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों में जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थ वाली धातुओं का प्रयोग है तथा पाप, कार्य, पठन, धैर्य और स्वाध्याय से जुगुप्सा, विराम या प्रमाद किया जा रहा है इसलिए इनकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति हो गयी है।

4. भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25)

सूत्रार्थ- भय (डर) अर्थवाली और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-

(i) **चोरात्** बिभेति (चोर से डरता है)

(ii) वृकः **सिंहात्** बिभेति (भेड़िया सिंह से डरता है)

(iii) शिशुः **सर्पात्** बिभेति (बच्चा साँप से डरता है)

(iv) पिता पुत्रं **सिंहात्** रक्षति (पिता पुत्र की सिंह से रक्षा करता है)

(v) माता पुत्रम् **अग्नेः** रक्षति (माता पुत्र की आग से रक्षा करती है)

(vi) **पापात्** त्रायते (पाप से रक्षा करता है)

अन्य उदाहरण - वनचरः सिंहात् विभेति, अधर्मी धर्मात् प्रमाद्यति, ईश्वरात परं न कोऽपि, ग्रामात् पूर्व तडागः अस्ति, निशायाः अनन्तरं दिनं भवति, ईश्वरात अधः सर्वः संसारः चलति, शिशोः किशोरः गुरुतरः भवति, चोरात् विभेति।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में भयार्थक 'भी' (बिभेति) धातु तथा त्राणार्थक 'रक्ष्' (रक्षति) धातु का प्रयोग है, तथा चोर, सिंह, सर्प, अग्नि, पाप आदि से डर या रक्षा हो रही है, इसीलिए इनमें अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. आख्यातोपयोगे (1.4.29)

जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय ऐसे व्याख्याता/प्रवक्ता/शिक्षक/पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होगी, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **उपाध्यायात्** अधीते। (उपाध्याय से पढ़ता है)

(ii) छात्रः **गुरोः** अधीते (छात्र गुरु जी से पढ़ता है)

(iii) रविः **शिक्षकात्** सङ्गीतं शिक्षते (रवि शिक्षक से संगीत सीखता है)

(iv) बालकः **अध्यापकात्** संस्कृतं पठति (बालक अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है)

(v) वटुः **गुरोः** कर्मकाण्डं जानाति। (वटु गुरु से कर्मकाण्ड जानता है)

6. "अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" (2.3.29)

अन्य, भिन्न, इतर, ऋते, पूर्व, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, आरभ्य, प्रभृति आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) अन्यः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(ii) भिन्नः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(iii) इतरः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(iv) ऋते कृष्णात् (कृष्ण के विना)

(v) पूर्वो ग्रामात् (गाँव से पूर्व)

(vi) प्राक् ग्रामात् (गाँव से पूर्व)

(vii) प्रत्यक् ग्रामात् (गाँव के बाद)

(viii) भवात् प्रभृति हरिः सेव्यः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं)

(ix) ग्रामाद् बहिः उद्यानम् अस्ति। (गाँव के बाहर बगीचा है)

अन्य उदाहरण - ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः, ग्रामस्य ग्रामात् वा अन्तिकम्।

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध)

1. षष्ठी शेषे (2.3.50) - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो बच गया हो, वही 'शेष' है।

इसप्रकार कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्यजनकभाव, कार्यकारणभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)

(ii) गङ्गायाः जलम् (गङ्गा का जल)

(iii) दशरथस्य पुत्रः (दशरथ का पुत्र)

(iv) पाञ्चालानां भूमिः (पाञ्चालों की भूमि)

अन्य उदाहरण - रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति, सीतायाः पतिः रामः अस्ति, गणेशः शिवस्य पुत्रः, गुरुजनस्य अनादर मां कुरु, रामस्य पुत्रः लवः, कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति, मम पुरतः शिक्षकः पाठयति, भवनस्य पृष्ठतः सीता आगच्छति, शिवस्य वामतः पार्वती तिष्ठति, विद्यालयस्य दक्षिणतः देवालयः अस्ति।

2. षष्ठी हेतुप्रयोगे (2.3.36)

सूत्रार्थ- यदि किसी वस्तु की हेतुता (कारणता) प्रकट करनी हो, और 'हेतु' शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु या कारण तथा 'हेतु' शब्द - दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) छात्रः **अध्ययनस्य हेतोः** प्रयागे वसति।
(छात्र अध्ययन के लिए प्रयाग में रहता है)

(ii) सः **धनस्य हेतोः** सेवते। (वह धन के हेतु सेवा करता है)

(iii) सः **अन्नस्य हेतोः** वसति। (वह अन्न के कारण रहता है)

(iv) सुमना **गृहस्य हेतोः** यतते। (सुमन घर के लिए प्रयास कर रही है)

स्पष्टीकरण- यहाँ कोई छात्र 'अध्ययन के लिए' प्रयाग में रहता है, अतः उसके रहने का कारण 'अध्ययन' है इसलिए अध्ययन में षष्ठी विभक्ति हुई और वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः 'हेतु' में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अन्य उदाहरण - पुस्तकं उत्पीठिकायाम् अस्ति, भिक्षुकः अन्नस्य हेतोः वसति, धनं कोषे अस्ति, नावः तडागे अस्ति, सम्प्रति शिक्षायाः महत्वम् अस्ति।

3. क्तस्य च वर्तमाने (2.3.67) - वर्तमान अर्थ में होने वाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **राज्ञां** पूजितः विद्वान् (वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है)

(ii) **सर्वेषाम्** आदृतः गुरुः (वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं)

(iii) **राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजते हैं)

4. षष्ठी चानादरे (2.3.38) - अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

(i) बालकानां चन्दनः दुष्टः (बालकों में चन्दन दुष्ट है)

(ii) खगानां काकः धूर्तः (पक्षियों में कौआ धूर्त होता है)

(iii) पशूनां शृगालः मूर्खः (पशुओं में गीदड़ मूर्ख होता है)

(iv) रुदतः पुत्रस्य पिता वनं गतः (रोते हुए पुत्र को छोड़कर पिता वन चला गया)

(v) रुदति पुत्रे सः प्रव्राजीत् (पुत्र के रोते रहने पर भी उसे छोड़कर संन्यास ले लिया)

अन्य उदाहरण - इदं रमेशस्य पुस्तक अस्ति, विद्यालयः छात्राः क्रीडन्ति, सः नृपस्य सेवकः अस्ति।

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

1. आधारोऽधिकरणम् (1.4.45) - आधार को **'अधिकरण'** कहते हैं। अधिकरण उसे कहते हैं, जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

आधार के भेद

आधार तीन प्रकार का होता है-

(i) औपश्लेषिक आधार - कटे आस्ते।

(ii) वैषयिक आधार - मोक्षे इच्छा अस्ति।

(iii) अभिव्यापक आधार - तिलेषु तैलम्, पयसि घृतम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

2. सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36) - अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) वयं **गेहे** वसामः (हम घर में रहते हैं)

(ii) **गङ्गायां** निर्मलं जलम् अस्ति। (गङ्गा में निर्मल जल है)

(iii) **क्षेत्रेषु** अन्नम् उत्पद्यते (खेतों में अन्न उत्पन्न होता है)

(iv) **वनेषु** सिंहाः वसन्ति (वनों में सिंह रहते हैं)

3. 'कुशल' तथा 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **शास्त्रे** कुशलः अस्ति (वह शास्त्र में कुशल है)

(ii) विद्वान् **वेदेषु** निपुणः अस्ति (विद्वान् वेदों में निपुण हैं)

पर्वते मृगाः सन्ति, ऋषिः आश्रमे निवसति, वृक्षेषु खगाः कूजन्ति, खगः वृक्षे निवसति, मीनः नद्याम् अस्ति, पाठशालायां पुस्तकालयः अस्ति।

4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)

'साधु' और 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) कृष्णः **मातरि** साधुः (कृष्ण माता के विषय में साधु हैं)

(ii) कृष्णः **मातुले** असाधुः। (कृष्ण मामा के विषय में असाधु हैं)

➢ यहाँ साधु शब्द के प्रयोग होने से 'मातरि' में सप्तमी तथा 'असाधु' शब्द के प्रयोग होने से 'मातुले' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. यतश्च निर्धारणम् (2.3.41) - निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

➢ यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताया जाय तो वही 'निर्धारण' कहलाता है।

अथवा

निर्धारण- जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का उत्कर्ष या अपकर्ष बताने के लिए अलग निर्देश करना 'निर्धारण' कहलाता है।

उदाहरण-

(i) **कविषु** कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)

कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

(ii) **नदीषु** गङ्गा पवित्रतमा। (नदियों में सबसे पवित्र गङ्गा हैं)

नदीनां गङ्गा पवित्रतमा।

(iii) **बालकेषु** रविः श्रेष्ठः। (बालकों में रवि सबसे अच्छा हैं)

बालकानां रविः श्रेष्ठः।

(iv) **पर्वतानां** हिमालयः उच्चतमः।

पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः। (पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा हैं)

(v) **नृणां** ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं)

नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः

(vi) **गवां** कृष्णा बहुक्षीरा

गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)

(vii) **गच्छतां** धावन् शीघ्रः।

गच्छत्सु धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है)

अन्य उदाहरण - सः क्रिकेटकीडायां कुशलः अस्ति, सः काव्य लेखने निपुणः अस्ति, सञ्जीवकपूरः पाककलाये प्रवीणम् अस्ति, माता पुत्रे स्नेहयति, असत्यवादिनि कोऽपि न विश्वसिति, धर्मे अनुरागे दृष्ट्वा मनः प्रसीदति, प्रेमे सति (भावे) सर्वं सुखदायकं भवति, नगरेषु भोपालपुरं गुरुतरं, पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः वर्तते, कृष्णः असादुः मातुले, धनं कोशे अस्ति, नदीनां गङ्गा श्रेष्ठतमा, नावः तडागे तरन्ति।

❑❑

प्रत्यय

प्रत्यय- प्रति + √अय् + अच् अर्थात् जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्णसमूह को प्रत्यय कहते हैं।

➢ मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् आदि।

(ii) तिङ् प्रत्यय- तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ शब्दों से लगने वाले प्रत्यय हैं-

(i) सुप् प्रत्यय- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

(ii) स्त्रीप्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् आदि।

(iii) तद्धित प्रत्यय- मतुप्, अण्, इनि आदि।

➢ कृत् प्रत्यय (कृदन्त)

कृत् प्रत्यय धातुओं से जोड़े जाते हैं, और इनसे बने पद को 'कृदन्त' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द निर्मित होते हैं- अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

1. क्त्वा प्रत्यय

जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे- छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति। (छात्र पढ़कर घर जाता है)

इस वाक्य में 'छात्र' रूपी कर्ता दो क्रियायें करता है- (i) पढ़ता है (ii) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया पूर्वकाल में हुई अतः यह पूर्वकालिक क्रिया होगी जिसमें 'क्त्वा' प्रत्यय लगकर 'पठित्वा' रूप बना है। अतः 'क्त्वा' पूर्वकालिक कृदन्त है।

➢ 'क्त्वा' प्रत्यय के 'क्' की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में 'इट्' का आगम होता है तो 'इत्वा' लगता है।

जैसे- बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।

यहाँ 'पठ्' धातु में 'इट्' का आगम होकर 'क्त्वा' प्रत्यय लगा है, इसीलिए 'पठित्वा' बना है।

धातु + प्रत्यय		क्त्वा-प्रत्ययान्त रूप
1. कृ + क्त्वा	=	**कृत्वा** (करके)
2. दा + क्त्वा	=	**दत्त्वा** (देकर)
3. पा + क्त्वा	=	**पीत्वा** (पीकर)
4. गम् + क्त्वा	=	**गत्वा** (जाकर)
5. हस् + क्त्वा	=	**हसित्वा** (हँसकर)
6. जि + क्त्वा	=	**जित्वा** (जीतकर)
7. स्था + क्त्वा	=	**स्थित्वा** (ठहरकर)
8. श्रु + क्त्वा	=	**श्रुत्वा** (सुनकर)
9. ज्ञा + क्त्वा	=	**ज्ञात्वा** (जानकर)
10. पत् + क्त्वा	=	**पतित्वा** (गिरकर)
11. स्ना + क्त्वा	=	**स्नात्वा** (स्नानकर)
12. दृश् + क्त्वा	=	**दृष्ट्वा** (देखकर) Imp.
13. पठ् + क्त्वा	=	**पठित्वा** (पढ़कर)
14. लभ् + क्त्वा	=	**लब्ध्वा** (प्राप्तकर) Imp.
15. भू + क्त्वा	=	**भूत्वा** (होकर)
16. त्यज् + क्त्वा	=	**त्यक्त्वा** (त्यागकर)
17. कथ् + क्त्वा	=	**कथयित्वा** (कहकर)
18. क्री + क्त्वा	=	**क्रीत्वा** (खरीदकर)
19. खेल + क्त्वा	=	**खेलित्वा** (खेलकर)
20. नी + क्त्वा	=	**नीत्वा** (लेकर)
21. प्रच्छ् + क्त्वा	=	**पृष्ट्वा** (पूँछकर) Imp.
22. ग्रह + क्त्वा	=	**गृहीत्वा** (लेना)
23. चल् + क्त्वा	=	**चलित्वा** (चलकर)
24. लिख् + क्त्वा	=	लेखित्वा (लिखकर)
25. क्रीड् + क्त्वा	=	क्रीडित्वा (खेलकर)

2. ल्यप् प्रत्यय

➢ जब धातु से पहले कोई उपसर्ग होता है तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश हो जाता है।

➢ 'ल्यप्' में 'ल्' और 'प्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'य' शेष बचता है। **''लशक्वतद्धिते''** सूत्र से 'ल्' की तथा **''हलन्त्यम्''** सूत्र से 'प्' की इत्संज्ञा।

➢ 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं और दोनों प्रत्यय 'पूर्वकालिक कृदन्त' है।

➢ **समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्** (7.1.37) सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय का विधान होता है।

➢ 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पदों का भी वही अर्थ है जो 'क्त्वा' प्रत्यय का है। **जैसे-** अनुभूय (अनुभव करके), आगम्य (आकर), प्रणम्य (प्रणाम करके) आदि।

(i) छात्रः **आगत्य** पठति (छात्र आकर पढ़ता है)

(ii) मनुष्यः सर्वं **विस्मृत्य** सुखी भवति (मनुष्य सब कुछ भूलकर सुखी होता है)

उपसर्ग + धातु + प्रत्यय = प्रत्ययान्त रूप (अर्थसहित)

1. अनु + भू + ल्यप् = **अनुभूय** (अनुभव करके)
2. आङ् + गम् + ल्यप् = **आगम्य/आगत्य** (आकर)
3. वि + नी + ल्यप् = **विनीय** (लेकर)
4. आङ् + प्रच्छ् + ल्यप् = **आपृच्छ्य** (पूँछकर)
5. प्र + कृ + ल्यप् = **प्रकृत्य** (करके)
6. प्र + आप् + ल्यप् = **प्राप्य** (प्राप्तकर)
7. वि + चि + ल्यप् = **विचित्य** (चुनकर)
8. वि + रम् + ल्यप् = **विरम्य/विरत्य** (रुककर)
9. प्र + नम् + ल्यप् = **प्रणत्य/प्रणम्य** (प्रणाम करके)
10. उत् + तृ + ल्यप् = **उत्तीर्य** (तैरकर, पारकर)
11. आ + दा + ल्यप् = **आदाय** (लेकर)
12. उप + गम् + ल्यप् = **उपगम्य** (समीप जाकर)
13. वि + हा + ल्यप् = **विहाय** (छोड़कर)
14. नि + पा + ल्यप् = **निपीय** (पानकर)
15. वि + स्मृ + ल्यप् = **विस्मृत्य** (भूलकर)
16. अव + तृ + ल्यप् = **अवतीर्य** (उतरकर)
17. सम् + श्रु + ल्यप् = **संश्रुत्य** (सुनकर)
18. आ + नी + ल्यप् = **आनीय** (लाकर)
19. प्र + स्था + ल्यप् = **प्रस्थाय** (चलकर)
20. उत् + लिख् + ल्यप् = **उल्लिख्य** (ऊपर लिखकर)
21. वि + ज्ञा + ल्यप् = **विज्ञाय** (अच्छी तरह से जानकर)
22. सम् + भू + ल्यप् = **सम्भूय** (मिलकर, इकट्ठा होकर)
23. प्र + पठ् + ल्यप् = **प्रपठ्य** (पढ़कर)
24. आङ् + पा + ल्यप् = **आपीय** (पूरी तरह से पीकर)
25. अनु + श्रु + ल्यप् = **अनुश्रूय** (सुन-सुनकर)
26. उप + कृ + ल्यप् = **उपकृत्य** (उपकार करके)
27. प्र + कुप् + ल्यप् = **प्रकुप्य** (अत्यधिक क्रोधित होकर)
28. अव + मुच् + ल्यप् = **अवमुच्य** (छोड़कर)
29. उप + भुज् + ल्यप् = **उपभुज्य** (खाकर)
30. सम् + दृश् + ल्यप् = **सन्दृश्य** (अच्छी तरह से देखकर)
31. उप + लभ् + ल्यप् = **उपलभ्य** (प्राप्त करके)
32. सम् + पठ् + ल्यप् = **सम्पठ्य**
33. वि + लिख् + ल्यप् = **विलिख्य**
34. सम् + युज् + ल्यप् = **संयुज्य**
35. वि + हस + ल्यप् = **विहस्य**
36. वि + लिख् + ल्यप् = **विलिख्य**

3. तुमुन् प्रत्यय

➢ **तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्** (3.3.10) इस सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

➢ 'के लिए' यह अर्थ बताना हो तो धातुओं से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे- **पठितुम्** (पढ़ने के लिए) **गन्तुम्** (जाने के लिए), **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए) आदि।

➢ इसीलिए 'तुमुन्' प्रत्यय को **'हेतु कृदन्त'** कहते हैं अर्थात् धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर तुमुनन्त पदों का अर्थ निकल आता है। जैसे- 'पठ्' धातु का अर्थ है- पढ़ना। इसमें 'तुमुन्' जोड़ने से बनेगा- **पठितुम्**, जिसका अर्थ है- पढ़ने के लिए।

➢ 'तुमुन् ' प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

➢ कर्ता जिस कार्य के निमित्त कोई क्रिया करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं, निमित्तार्थक क्रिया में ही 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे- **बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।** (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है)

➢ यहाँ बालक रूपी कर्ता पढ़ने के निमित्त विद्यालय जाता है; अतः निमित्तार्थक क्रिया 'पठ्' में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पठितुम्' बना। बालक की गमन क्रिया पढ़ने के निमित्त हो रही है।

➢ 'तुमुन्' प्रत्यय में नकार की 'हलन्त्यम्' से और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर 'तुम्' शेष रहता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु + प्रत्यय	=	तुमुनन्त पद (अर्थ सहित)
1. भू + तुमुन्	=	**भवितुम्** (होने के लिए)
2. पा + तुमुन्	=	**पातुम्** (पीने के लिए)
3. पठ् + तुमुन्	=	**पठितुम्** (पढ़ने के लिए)
4. गम् + तुमुन्	=	**गन्तुम्** (जाने के लिए)
5. स्था + तुमुन्	=	**स्थातुम्** (बैठने के लिए)
6. दृश् + तुमुन्	=	**द्रष्टुम्** (देखने के लिए) Imp.
7. दा + तुमुन्	=	**दातुम्** (देने के लिए)
8. लभ् + तुमुन्	=	**लब्धुम्** (पाने के लिए) Imp.
9. ज्ञा + तुमुन्	=	**ज्ञातुम्** (जानने के लिए)
10. हन् + तुमुन्	=	**हन्तुम्** (मारने के लिए)
11. कृ + तुमुन्	=	**कर्तुम्** (करने के लिए) Imp.
12. जि + तुमुन्	=	**जेतुम्** (जीतने के लिए) Imp.
13. श्रु + तुमुन्	=	**श्रोतुम्** (सुनने के लिए)
14. प्रच्छ् + तुमुन्	=	**प्रष्टुम्** (पूँछने के लिए) Imp.
15. त्यज् + तुमुन्	=	**त्यक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
16. स्ना + तुमुन्	=	**स्नातुम्** (नहाने के लिए)
17. गै (गा) + तुमुन्	=	**गातुम्** (गाने के लिए)
18. खाद् + तुमुन्	=	**खादितुम्** (खाने के लिए)
19. क्रीड् + तुमुन्	=	**क्रीडितुम्** (खेलने के लिए)
20. वन्द् + तुमुन्	=	**वन्दितुम्** (वन्दना करने के लिए)
21. भुज् + तुमुन्	=	**भोक्तुम्** (खाने के लिए)
22. शीङ् + तुमुन्	=	**शयितुम्** (सोने के लिए)

23. वच् + तुमुन् = **वक्तुम्** (बोलने के लिए)
24. ग्रह् + तुमुन् = **ग्रहीतुम्** (लेने के लिए)
25. अस् + तुमुन् = **भवितुम्** (होने के लिए)
26. क्षिप् + तुमुन् = **क्षेप्तुम्** (फेंकने के लिए)
27. क्री + तुमुन् = **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए)
28. चि + तुमुन् = **चेतुम्** (चुनने के लिए)
29. कुप् + तुमुन् = **कोपितुम्** (क्रोध करने के लिए)
30. मुच् + तुमुन् = **मोक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
31. दा + तुमुन् = दातुम्
32. हस् + तुमुन् = हसितुम्
33. पत् + तुमुन् = पतितुम्
34. लिख् + तुमुन् = लेखितम्
35. वद् + तुमुन् = वक्तुम्

4. यत् प्रत्यय

➢ **''अचो यत्''** (3.1.97) सूत्र से 'यत्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। अर्थात् अच् (स्वर) वर्ण जिन धातुओं के अन्त में होते हैं, उनसे 'यत्' प्रत्यय होता है।

➢ 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ को बताने वाले 'यत्' प्रत्यय के 'त्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर केवल 'य' शेष बचता है।

➢ 'यत्' प्रत्यय जुड़ने के बाद धातु के स्वर को गुण हो जाता है।

	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चि + यत्	= **चेयम्** (चयन करने योग्य)	**चेयः**	चेया
पा + यत्	= **पेयम्** (पीने योग्य)	**पेयः**	पेया
नी + यत्	= **नेयम्** (ले जाने योग्य)	**नेयः**	नेया
जि + यत्	= **जेयम्** (जीतने योग्य)	**जेयः**	जेया
श्रु + यत्	= **श्रव्यम्** (सुनने योग्य)	**श्रव्यः**	श्रव्या
दा + यत्	= **देयम्** (देने योग्य)	**देयः**	देया
गै + यत्	= **गेयम्** (गाने योग्य)	**गेयः**	गेया
भू + यत्	= **भव्यम्** (होने योग्य)	**भव्यः**	भव्या
भी + यत्	= **भेयम्** (डरने योग्य)	**भेयः**	भेया
लभ् + यत्	= **लभ्यम्** (प्राप्त करने योग्य)	**लभ्यः**	लभ्या
शक् + यत्	= **शक्यम्** (होने योग्य)	**शक्यः**	शक्या
हन् + यत्	= **वध्यम्** (वधयोग्य)	**वध्यः**	वध्या

➢ **पोरदुपधात् (3.1.98) -** इस सूत्र से पवर्ग अन्त में हो अथवा ह्स्व अकार उपधा में हो, ऐसी धातुओं से 'यत्' प्रत्यय होता है जैसे- लभ् + यत् = **लभ्यम्**

शप् + यत् = **शप्यम्**

5. क्तिन् प्रत्यय

➢ **स्त्रियां क्तिन्** (3.3.94) सूत्र से भाव अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होता है।

➢ 'क्तिन्' में ककार और नकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'ति' शेष बचता है। ''लशक्वतद्धिते'' से 'क्' की तथा ''हलन्त्यम्'' से 'न्' की इत्संज्ञा होती है।

➢ 'क्तिन्' प्रत्यय से बने शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होंगे।

जैसे- कृतिः, गतिः, भूतिः, धृतिः आदि।

उदाहरण-

(1) कृ + क्तिन् = **कृतिः**
(2) नी + क्तिन् = **नीतिः**
(3) गम् + क्तिन् = **गतिः**
(4) धृ + क्तिन् = **धृतिः**
(5) भू + क्तिन् = **भूतिः**
(6) नम् + क्तिन् = **नतिः**
(7) स्तु + क्तिन् = **स्तुतिः**
(8) श्रु + क्तिन् = **श्रुतिः**
(9) स्मृ + क्तिन् = **स्मृतिः**
(10) दृश् + क्तिन् = **दृष्टिः**
(11) मन् + क्तिन् = **मतिः**
(12) भज् + क्तिन् = **भक्तिः**
(13) बुध् + क्तिन् = **बुद्धिः**
(14) मुच् + क्तिन् = **मुक्तिः**
(15) शम् + क्तिन् = **शान्तिः**
(16) गै + क्तिन् = **गीतिः**
(17) पुष् + क्तिन् = **पुष्टिः**

6. ल्युट् प्रत्यय

➢ **''नपुंसके भावे क्तः''** (3.3.114) **''ल्युट् च''** (3.3.115) सूत्र से भाववाचक अर्थ में नपुंसकत्व में 'ल्युट्' प्रत्यय लगता है।

➢ ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसलिङ्ग में ही होते हैं।

जैसे- पठनम्, लेखनम्, दानम्, लेखनम् आदि।

➢ 'ल्युट्' प्रत्यय के 'ल्' और 'ट्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, 'यु' शेष रहता है। तथा 'यु' को ''युवोरनाकौ'' सूत्र से 'अन' आदेश हो जाता है।

उदाहरण-

1. लिख् + ल्युट् = **लेखनम्**
2. दा + ल्युट् = **दानम्**
3. अर्च + ल्युट् = **अर्चनम्**
4. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
5. पठ् + ल्युट् = **पठनम्**
6. ज्ञा + ल्युट् = **ज्ञानम्**
7. कृ + ल्युट् = **करणम्**
8. नी + ल्युट् = **नयनम्**

9. ग्रह् + ल्युट् = **ग्रहणम्**
10. गम् + ल्युट् = **गमनम्**
11. भू + ल्युट् = **भवनम्**
12. दृश् + ल्युट् = **दर्शनम्**
13. हन् + ल्युट् = **हननम्**
14. अधि + इङ् + ल्युट् = **अध्ययनम्**
15. श्रु + ल्युट् = **श्रवणम्**
16. स्मृ + ल्युट् = **स्मरणम्**
17. हृ + ल्युट् = **हरणम्**
18. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
19. शीङ् + ल्युट् = **शयनम्**
20. चि + ल्युट् = **चयनम्**
21. यच् + ल्युट् = **याचनम्**

7. तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय

- ''**तव्यत्तव्यानीयरः**'' (3.1.96) सूत्र से धातु के बाद तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
- तव्यत् के त् का लोप होकर 'तव्य' एवं 'अनीयर्' प्रत्यय के 'र्' का लोप होकर 'अनीय' शेष बचता है।
- तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' या 'योग्यता' अर्थ में होता है।

जैसे-पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए)
पठनीयम् (पढ़ना चाहिए)

- इन प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है; कर्तृवाच्य में नहीं।

जैसे- मया पठनीयम्।
मया पठितव्यम्।

'अनीयर्' प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कथ् + अनीयर्	=	कथनीयम्	-	कथनीयः	-	कथनीया
2.	भू + अनीयर्	=	भवनीयम्	-	भवनीयः	-	भवनीया
3.	दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्	-	दर्शनीयः	-	दर्शनीया
4.	पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्	-	पठनीयः	-	पठनीया
5.	पा + अनीयर्	=	पानीयम्	-	पानीयः	-	पानीया
6.	कृ + अनीयर्	=	करणीयम्	-	करणीयः	-	करणीया
7.	गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्	-	गमनीयः	-	गमनीया
8.	रम् + अनीयर्	=	रमणीयम्	-	रमणीयः	-	रमणीया
9.	हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्	-	हसनीयः	-	हसनीया
10.	घ्रा + अनीयर्	=	घ्राणीयम्	-	घ्राणीयः	-	घ्राणीया
11.	स्था + अनीयर्	=	स्थानीयम्	-	स्थानीयः	-	स्थानीया
12.	वच् + अनीयर्	=	वचनीयम्	-	वचनीयः	-	वचनीया
13.	लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्	-	लेखनीयः	-	लेखनीया
14.	श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्	-	श्रवणीयः	-	श्रवणीया
15.	दा + अनीयर्	=	दानीयम्	-	दानीयः	-	दानीया
16.	स्मृ + अनीयर्	=	स्मरणीयम्	-	स्मरणीयः	-	स्मरणीया
17.	खाद् + अनीयर्	=	खादनीयम्	-	खादनीयः	-	खादनीया

तव्यत् प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
2.	गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
3.	पच् + तव्यत्	=	पक्तव्यम्	-	पक्तव्यः	-	पक्तव्या
4.	दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्	-	द्रष्टव्यः	-	द्रष्टव्या
5.	प्रच्छ् + तव्यत्	=	प्रष्टव्यम्	-	प्रष्टव्यः	-	प्रष्टव्या
6.	भू + तव्यत्	=	भवितव्यम्	-	भवितव्यः	-	भवितव्या

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
7.	स्था + तव्यत्	=	स्थातव्यम्	-	स्थातव्यः	-	स्थातव्या
8.	रुद् + तव्यत्	=	रोदितव्यम्	-	रोदितव्यः	-	रोदितव्या
9.	नृत् + तव्यत्	=	नर्तितव्यम्	-	नर्तितव्यः	-	नर्तितव्या
10.	पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्	-	पठितव्यः	-	पठितव्या
11.	लिख् + तव्यत्	=	लेखितव्यम्	-	लेखितव्यः	-	लेखितव्या
12.	स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्	-	स्मर्तव्यः	-	स्मर्तव्या
13.	श्रु + तव्यत्	=	श्रोतव्यम्	-	श्रोतव्यः	-	श्रोतव्या
14.	जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्	-	जेतव्यः	-	जेतव्या
15.	दा + तव्यत्	=	दातव्यम्	-	दातव्यः	-	दातव्या
16.	पा + तव्यत्	=	पातव्यम्	-	पातव्यः	-	पातव्या
17.	ज्ञा + तव्यत्	=	ज्ञातव्यम्	-	ज्ञातव्यः	-	ज्ञातव्या

8. क्त और क्तवतु प्रत्यय

- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- 'क्त' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त' शेष बचता है। यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का रूप तीनों लिङ्गों में होता है-

जैसे- **पठितः** (पुं.) **पठिता** (स्त्री.) **पठितम्** (नपु.) - क्त प्रत्ययान्तपद

पठितवान् (पु.) **पठितवती** (स्त्री.) **पठितवत्** (नपुं.) - क्तवतु प्रत्ययान्तपद

'क्त' प्रत्ययान्त पदों की सूची

			पु.	स्त्री.	नपुं.
1.	गम् + क्त	=	गतः	गता	गतम्
2.	कृ + क्त	=	कृतः	कृता	कृतम्
3.	पठ् + क्त	=	पठितः	पठिता	पठितम्
4.	प्रच्छ् + क्त	=	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
5.	लिख् + क्त	=	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
6.	कथ् + क्त	=	कथितः	कथिता	कथितम्
7.	कम्प् + क्त	=	कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्
8.	चिन्त् + क्त	=	चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्
9.	जि + क्त	=	जितः	जिता	जितम्
10.	पूज् + क्त	=	पूजितः	पूजिता	पूजितम्
11.	विद् + क्त	=	विदितः	विदिता	विदितम्
12.	नश् + क्त	=	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
13.	शक् + क्त	=	शक्तः	शक्ता	शक्तम्
14.	शिक्ष् + क्त	=	शिक्षितः	शिक्षिता	शिक्षितम्
15.	भू + क्त	=	भूतः	भूता	भूतम्
16.	हस् + क्त	=	हसितः	हसिता	हसितम्
17.	खाद् + क्त	=	खादितः	खादिता	खादितम्

18.	क्रीड् + क्त	=	क्रीडितः	क्रीडिता	क्रीडितम्
19.	पत् + क्त	=	पतितः	पतिता	पतितम्
20.	श्रु + क्त	=	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्
21.	शोभ् + क्त	=	शोभितः	शोभिता	शोभितम्
22.	प्रविश् + क्त	=	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
23.	भाष् + क्त	=	भाषितः	भाषिता	भाषितम्
24.	मिल् + क्त	=	मिलितः	मिलिता	मिलितम्
25.	पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
26.	अधि + इङ् + क्त	=	अधीतः	अधीता	अधीतम्
27.	आङ् + हु + क्त	=	आहूतः	आहूता	आहूतम्
28.	ज्वल् + क्त	=	ज्वलितः	ज्वलिता	ज्वलितम्
29.	जीव् + क्त	=	जीवितः	जीविता	जीवितम्
30.	रुच् + क्त	=	रुचितः	रुचिता	रुचितम्
31.	वद् + क्त	=	वदितः	वदिता	वदितम्

क्तवतु प्रत्ययान्त पदों की सूची

			पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
2.	गम् + (जाना)	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
3.	श्रु (सुनना)	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
4.	पूज् (पूजा करना)	=	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
5.	लिख् (लिखना)	=	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
6.	ज्ञा (जानना)	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
7.	अर्च् (पूजा करना)	=	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
8.	आ दिश् (आज्ञा देना)	=	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
9.	आप् (प्राप्त करना)	=	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
10.	आ + रुह् (चढ़ना)	=	आरूढवान्	आरूढवती	आरूढवत्
11.	उप् + विश् (बैठना)	=	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
12.	कथ् (कहना)	=	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
13.	क्री (खरीदना)	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
14.	पत् (गिरना)	=	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
15.	त्यज् (त्यागना)	=	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
16.	लभ् (प्राप्त करना)	=	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
17.	सृज् (सृष्टि करना)	=	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
18.	ग्रह् (ग्रहण करना)	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
19.	पा (पीना)	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
20.	भू (होना)	=	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
21.	स्ना (स्नान करना)	=	स्नातवान्	स्नातवती	स्नातवत्
22.	पठ् + क्तवतु	=	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
23.	क्रीड + क्तवतु	=	क्रीडितवान्	क्रीडितवती	क्रीडितवत्
24.	हस् + क्तवतु	=	हसितवान्	हसितवती	हसितवत्
25.	खाद् + क्तवतु	=	खादितवान्	खादितवती	खादितवत्
26.	वद् + क्तवतु	=	वदितवान्	वदितवती	वदितवत्

9. णमुल् प्रत्यय

- **''आभीक्ष्ण्ये णमुल् च''** (3.4.22) सूत्र से समान कर्ता वाले दो धातुओं से पूर्वकालिक धातु से 'णमुल्' प्रत्यय होता है; बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।
- यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ 'णमुल्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'णमुल्' में 'अम्' शेष रहता है।
- णमुल् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इनके रूप नहीं चलते।

'णमुल्' प्रत्ययान्त पदों की सूची

(1)	तड् + णमुल्	=	ताडं ताडम् (मार मारकर)
(2)	दा + णमुल्	=	दायं दायम् (दे-देकर)
(3)	पा + णमुल्	=	पायं पायम् (पी-पीकर)
(4)	गम् + णमुल्	=	गामं गामम् (जा-जाकर)
(5)	वृ + णमुल्	=	वारं वारम् (बार-बार)
(6)	छिद् + णमुल्	=	छेदं छेदम् (छेद-छेदकर)
(7)	नम् + णमुल्	=	नामं नामम् (झुक-झुककर)
(8)	पठ् + णमुल्	=	पाठं पाठम् (पढ़-पढ़कर)
(9)	रुद् + णमुल्	=	रोदं रोदम् (रो-रोकर)
(10)	भिद् + णमुल्	=	भेदं भेदम् (फोड़-फोड़कर)
(11)	पच् + णमुल्	=	पाचं पाचम् (पका पकाकर)
(12)	दृश् + णमुल्	=	दर्शं दर्शम् (बार बार देखकर)
(13)	नश् + णमुल्	=	नाशं नाशम् (नष्ट कर करके)
(14)	लभ् + णमुल्	=	लाभं लाभम् (बार बार प्राप्त करके)
(15)	ग्रह् + णमुल्	=	ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकडकर)
(16)	कृ + णमुल्	=	कारकः

10. शतृ प्रत्यय और शानच् प्रत्यय

- **लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)** सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों का विधान होता है।
- शतृ और शानच् - दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं।
- **''तौ सत्''** सूत्र से शतृ और शानच् - दोनों प्रत्ययों की 'सत् संज्ञा' होती है।
- 'लगातार कार्य का होना' इस अर्थ को बताने के लिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- शतृ प्रत्यय में 'अत्' और 'शानच्' में 'आन' शेष बचता है।
- परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ' एवं आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होते हैं।
- 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में चलते हैं-

(i) पठ् + शतृ = **पठन्** (पुं.), **पठन्ती** (स्त्री.), **पठत्** (नपु.)

(ii) कम्प् + शानच् = **कम्पमानः** (पु.), **कम्पमाना** (स्त्री.), **कम्पमानम्** (नपु.)

- ये प्रत्यय कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- **पठन् बालकः गच्छति।** (पढ़ता हुआ बालक जाता है)

भाषमाणः शिक्षकः लिखति। (बोलता हुआ शिक्षक लिखता है)

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	पठ् (पढ़ना)	पठन्	पठन्ती	पठत्
2.	लिख् (लिखना)	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
3.	क्रीड् (खेलना)	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
4.	कृ (करना)	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
5.	धाव् (दौड़ना)	धावन्	धावन्ती	धावत्
6.	श्रु (सुनना)	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
7.	आप् (पाना)	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्
8.	गम् (जाना)	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
9.	गर्ज् (गरजना)	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
10.	दृश् (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
11.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

12.	अर्च् (पूजना)	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
13.	क्री (खरीदना)	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
14.	गै (गाना)	गायन्	गायन्ती	गायत्
15.	छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
16.	शक् (सकना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
17.	स्वप् (सोना)	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
18.	स्मृ (स्मरण करना)	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
19.	हृ (हरण करना)	हरन्	हरन्ती	हरत्
20.	हस् (हँसना)	हसन्	हसन्ती	हसत्
21.	अस् (होना)	सन्	सती	सत्
22.	खाद् (खाना)	खादन्	खादन्ती	खादत्
23.	चल् (चलना)	चलन्	चलन्ती	चलत्
24.	ज्ञा (जानना)	जानन्	जानती	जानत्
25.	भू (होना)	भवन्	भवन्ती	भवत्
26.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्
27.	वद् + शतृ	वदन्	वदन्ती	वदत्

शानच् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	भाष्	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
2.	एध्	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
3.	कृ	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
4.	यज्	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
5.	लभ्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
6.	याच्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
7.	नी	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
8.	वृध्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
9.	वृत् (होना)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
10.	शी (सोना)	शयानः	शयाना	शयानम्
11.	कम्प् (काँपना)	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
12.	आस् (बैठना)	आसीनः	आसीना	आसीनम्
13.	जन् (पैदा होना)	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
14.	त्वर् (जल्दी करना)	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
15.	सेव् (सेवा करना)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
16.	सह् (सहन करना)	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
17.	कथ् (कहना)	कथयमाणः	कथयमाणा	कथयमाणम्
18.	मुद् + शानच्	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्

तद्धितप्रत्यय

तद्धितप्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् अव्ययपदों से जोड़े जाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय के योग से बने शब्द '**तद्धितान्त**' कहे जाते हैं।

1. मतुप् प्रत्यय

(i) तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (5.2.94) सूत्र से 'वह इसका है' 'वह इसमें है' - इन अर्थों में 'मतुप्' प्रत्यय होता है।

(ii) 'मतुँप्' के पकार एवं उकार का योग होकर 'मत्' शेष बचता है।

(iii) 'मतुँप्' प्रत्ययान्त पद विशेषण होते हैं अतः विशेष्य के अनुसार इनका लिङ्ग, वचन और विभक्ति निर्धारित होती है।

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. गो + मतुप् = **गोमत् (गोमान्)** गौ वाला
2. मति + मतुप् = **मतिमत् (मतिमान्)** बुद्धि वाला
3. श्री + मतुप् = **श्रीमत् (श्रीमान्)** श्री से युक्त
4. धी + मतुप् = **धीमत् (धीमान्)** बुद्धि वाला
5. आयुस् + मतुप् = **आयुष्मत् (आयुष्मान्)** दीर्घायु

(1) मतुप् (मत्) का 'म' बदलकर 'व' हो जाता है, यदि अकारान्त या आकारान्त हो; जैसे-

(i) बल + मतुप् = **बलवत्** (बलवान्)

(ii) विद्या + मतुप् = **विद्यावत्** (विद्यावान्)

(iii) धन + मतुप् = **धनवत्** (धनवान्)

(iv) दया + मतुप् = **दयावत्** (दयावान्)

(v) गुण + मतुप् = **गुणवत्** (गुणवान्)

(vi) भग + मतुप् = **भगवत्** (भगवान्)

(2) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले 'म्' हो-

लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवान्

(3) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले 'अ' या 'आ' हो। जैसे-

यशस् + मतुप् = **यशस्वत्** (यशस्वान्)

भास् + मतुप् = **भास्वत्** (भास्वान्)

(4) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई हो। जैसे-

विद्युत् + मतुप् = **विद्युत्वत्** (विद्युत्वान्)

सुहृद् + मतुप् = **सुहृद्वत्** (सुहृद्वान्)

बुद्धि + मतुप् = **बुद्धिमान** (बुद्धिशाली)

शक्ति + मतुप् = **शक्तिमान्** (शक्तिशाली)

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

शब्द + प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. धन् + मतुप् =	धनवान्	धनवती	धनवत्
2. रूप + मतुप् =	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
3. बल + मतुप् =	बलवान्	बलवती	बलवत्
4. गुण + मतुप् =	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
5. रस + मतुप् =	रसवान्	रसवती	रसवत्
6. धी + मतुप् =	धीमान्	धीमती	धीमत्
7. श्री + मतुप् =	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्

2. अण् प्रत्यय

(1) शिव + अम् = शैवः

(2) विष्णु + अण् = वैष्णवः

3. इनि प्रत्यय

(1) **अत इनिठनौ (5.2.115)** अर्थात् अकारान्त शब्दों से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं।

(2) 'इनि' प्रत्यय के अन्त में विद्यमान 'इ' का लोप हो जाता है अतः केवल 'इन्' शेष बचता है।

(3) यह प्रत्यय भी 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे-
धन + इनि = धनिन् (धनी) = धन वाला।

इनि (इन्) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1.	च्रक + इनि	=	चक्रिन् /चक्री
2.	धन + इनि	=	धनिन् / धनी
3.	बल + इनि	=	बलिन् / बली
4.	दुःख + इनि	=	दुःखिन् / दुःखी
5.	गुण + इनि	=	गुणिन् / गुणी
6.	कर + इनि	=	करिन् / करी
7.	हस्त + इनि	=	हस्तिन् / हस्ती
8.	दण्ड + इनि	=	दण्डिन् / दण्डी
9.	शिखा + इनि	=	शिखिन् / शिखी
10.	सुख + इनि	=	सुखिन् / सुखी
11.	कर्म + इनि	=	कर्मिन् / कर्मी
12.	प्रणय + इनि	=	प्रणयिन् / प्रणयी
13.	माला + इनि	=	मालिन् / माली
14.	दोष + इनि	=	दोषिन् / दोषी
15.	ज्ञान + इनि	=	ज्ञानिन् / ज्ञानी
16.	दान + इनि	=	दानिन् / दानी
17.	माया + इनि	=	मायिन् / मायी

4. त्व और तल् प्रत्यय

(1) ''तस्य भावस्त्वतलौ'' (5.1.119) सूत्र से किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) प्रत्यय जोड़ देते हैं।

(2) 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(3) 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4.2.43) सूत्र से तल् प्रत्यय होता है। जैसे- ग्रामता, बन्धुता, जनता आदि।

(4) गजता, सहायता आदि में भी तल् प्रत्यय है।

'त्व' और तल् प्रत्ययान्त पदों की सूची

शब्द	'त्व' प्रत्ययान्त पद	'तल्' प्रत्ययान्त पद
1. कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
2. गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
3. मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
4. देव	देवत्वम्	देवता
5. सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
6. मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
7. शिशु	शिशुत्वम्	शिशुता
8. पशु	पशुत्वम्	पशुता
9. मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
10. दुर्जन	दुर्जनत्वम्	दुर्जनता
11. महत्	महत्त्वम्	महत्ता
12. लघु	लघुत्वम्	लघुता

5. ठक् प्रत्यय

(1) 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' के 'ठ्' के स्थान पर 'इक' आदेश होता है।

(2) शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है; जैसे- 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ऐ', 'उ' को 'औ' हो जाता है। अर्थात् आदि अच् की वृद्धि होती है।

ठक् (इक) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. धर्म + ठक् (इक) = धार्मिकः
2. अस्ति + ठक् (इक) = आस्तिकः
3. सप्ताह + ठक् (इक) = साप्ताहिकः
4. संस्कृति + ठक् (इक) = सांस्कृतिकः
5. अश्व + ठक् (इक) = आश्विकः
6. साहित्य + ठक् (इक) = साहित्यिकः
7. लोक + ठक् (इक) = लौकिकः
8. दिन + ठक् (इक) = दैनिकः
9. इतिहास + ठक् = ऐतिहासिकः
10. समाज + ठक् = सामाजिकः
11. दधि + ठक् = दधिकम्

स्त्रीप्रत्यय

पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'स्त्रीप्रत्यय'** कहा जाता है।
जैसे- टाप्, चाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

(1) टाप् प्रत्यय

(i) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) सूत्र से अजादिगण में गिने गये शब्दों को और अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

(ii) 'टाप्' प्रत्यय के 'ट्' और 'प्' का लोप होकर केवल 'आ' बचता है। अतः 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

(iii) 'टाप्' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप 'रमा' की भाँति चलते हैं।

जैसे- शिक्षक + टाप् = **शिक्षिका**
अज + टाप् = **अजा**
चटक + टाप् = **चटका**
सुत + टाप् = **सुता**
शूद्र + टाप् = **शूद्रा**
कनिष्ठ + टाप् = **कनिष्ठा**
प्रथम + टाप् = **प्रथमा**
बाल + टाप् = **बाला**
अश्व + टाप् = **अश्वा**
क्षत्रिय + टाप् = **क्षत्रिया**
अनुकूल + टाप् = **अनुकूला**
सुनयन + टाप् = **सुनयना**
अचल + टाप् = **अचला**
कुशल + टाप् = **कुशला**
कोकिल + टाप् = **कोकिला**

नोट- 'टाप्' प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो, और 'क' से पूर्व 'अ' हो तो.....'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है।

जैसे-

कारक + टाप् = **कारिका**

नाटक + टाप् = **नाटिका**

बालक + टाप् = **बालिका**

अध्यापक + टाप् = **अध्यापिका**

गायक + टाप् = **गायिका**

(2) ङीष् प्रत्यय

(i) **'षिद्गौरादिभ्यश्च' (4.1.41)** सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

(ii) जिन प्रत्ययों में 'षकार' का लोप हुआ हो, ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ङीष्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(iii) 'ङीष्' में 'ङ्' की और 'ष्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'ई' शेष बचता है। इसीलिए ङीष् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग पद कहलाते हैं।

(iv) ङीष् प्रत्ययान्त पदों का रूप 'नदी' की तरह चलता है।

जैसे-

नर्तक + ङीष् = **नर्तकी**

गौर + ङीष् = **गौरी**

नट + ङीष् = **नटी**

मातामह + ङीष् = **मातामही**

चन्द्रमुख + ङीष् = **चन्द्रमुखी**

मनुष्य + ङीष् = **मनुषी**

शिखण्ड + ङीष् = **शिखण्डी**

तट + ङीष् = **तटी**

शूद्र + ङीष् = **शूद्री**

ष्टु + ङीष् = **पट्वी**

मानुष् + ङीष = **मानुषी**

महिष् + ङीष् = **महिषी**

मृदु + ङीष् = **मृद्वी**

(3) ङीप् प्रत्यय

(i) 'ङीप्' प्रत्यय के 'ङ्' और 'प्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) ङीप् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं, इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलता है।

(iii) ''टिड्ढाणञ् ....'' ''वयसि प्रथमे'' ''द्विगोः'' आदि सूत्रों से 'ङीप्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

नद + ङीप् = **नदी**

देव + ङीप् = **देवी**

तरुण + ङीप् = **तरुणी**

गार्ग्य + ङीप् = **गार्गी**

कुमार + ङीप् = **कुमारी**

किशोर + ङीप् = **किशोरी**

त्रिलोक + ङीप् = **त्रिलोकी**

अष्टाध्याय + ङीप् = **अष्टाध्यायी**

पञ्चवट + ङीप् = **पञ्चवटी**

त्रिपाद + ङीप् = **त्रिपादी**

कर्तृ + ङीप् = **कर्त्री**

गुणिन् + ङीप् = **गुणिनी**

सुखकर + ङीप् = **सुखकरी**

भोगकर + ङीप् = **भोगकरी**

श्रीमत् + ङीप् = **श्रीमती**

भवत् + ङीप् = **भवती**

(4) ङीन् प्रत्यय

(i) 'ङीन्' प्रत्यय का भी 'ङ्' और 'न्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) इस प्रत्यय से बने रूप भी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, अतः इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलेगा।

(iii) **''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''** एवं **''नृनरयोर्वृद्धिश्च''** से 'ङीन्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

ब्राह्मण + ङीन् = **ब्राह्मणी**

शार्ङ्गरव + ङीन् = **शार्ङ्गरवी**

नृ + ङीन् = **नारी**

नर + ङीन् = **नारी**

❑❑